International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

स्वामी विवेकानंद के नव-वेदांत दर्शन एवं धार्मिक विचारों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता

Jyoti Sachan
Research Scholar, Department of Education, Himalayan University
Dr. Poonam Madan
Research Guide, Department of Education, Himalayan University

सारांश
सत्य, अहिंसा, दया, अपरिग्रह, एकता, प्रेम, सहानुभूति तथा तप आदि ऐसे जीवन मूल्य हैं जो भारतीय शिक्षा को सांस्कृतिक विरासत में प्राप्त हुए हैं। स्वामी विवेकानन्द ने इन सबको जीवन मूल्यों के रूप में ग्रहण कर जिस शिक्षा दर्शन का प्रतिपादन किया है वह भारतीय शिक्षा दर्शन की अमूल्य निधि तथा मुकुटमणि है। विश्व के किसी भी शैक्षिक दर्शन में इस प्रकार की एकता दृष्टिगोचर नहीं होती है। फलस्वरूप अन्य किसी भी दर्शन में यह क्षमता नहीं है कि व्यक्ति के व्यक्तिगत सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक आदि विकास को इतनी यथार्थता से सुनिश्चित कर सके।
मूल शब्द: प्रतिपादन, आध्यात्मिक, चारित्रिक, यथार्थता, मुकुटमणि, दृष्टिगोचर।

प्रस्तावना
वर्तमान वैश्विक समाज में व्याप्त अनैतिकता, भ्रष्टाचार, आतंकवाद तथा अंतरव्यक्तिगत संबंधों में गिरावट और मानवीय मूल्यों का ह्रास जैसी विशाल समस्याएँ अपनी संरचनात्मक एवं प्रकृतिगत विशेषताओं के कारण समाज की मूलभूत संरचनाओं और प्रक्रियाओं को पूर्णतः प्रभावित कर रही हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। केवल शिक्षा के उद्देश्यों और मूल्यों में उचित परिवर्तन करके सुधार की असीम संभावनाओं में से अधिकांश को प्राप्त किया जा सकता है।
इस दृष्टिकोण से जब हम **स्वामी विवेकानंद के नव वेदांत दर्शन तथा धार्मिक विचारों** की ओर देखते हैं, तो हमें ऐसे मूलभूत विचार प्राप्त होते हैं जो समाज के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक आत्मबल प्रदान करते हैं।
मनुष्य एक बुद्धिमान प्राणी होने के कारण अपने जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने और उसे निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रखने के लिए सभ्यता के आरंभ से ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड, उसके निर्माता, तथा अपने जीवन के स्वरूप, समस्याओं, रहस्यों और लक्ष्यों पर निरंतर चिंतन करता रहा है। चिंतन के परिणामस्वरूप उसे जो तथ्य, निष्कर्ष, विश्वास और सत्य प्राप्त हुए, वही शिक्षा के रूप में विकसित हुए, जो सदैव मानव जीवन का अभिन्न अंग रहे हैं।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

विस्तृत अर्थ में शिक्षा बालक के जन्म से ही प्रारंभ हो जाती है और उसके पूरे जीवन तक चलती रहती है। यह शिक्षा केवल विद्यालय तक सीमित नहीं होती, बल्कि व्यक्ति के सभी पहलुओं का विकास करती है। इस दृष्टिकोण से शिक्षा केवल स्कूल, शिक्षण तथा प्रशिक्षण तक ही सीमित नहीं है, बल्कि बालक अपने जीवन के समस्त अनुभवों से शिक्षा प्राप्त करता है, चाहे वे अनुभव विद्यालय के भीतर हों या बाहर।
विद्यालय में भी शिक्षा केवल कक्षा-कक्ष तक सीमित नहीं रहती, बल्कि पुस्तकालय, प्रयोगशाला और खेल का मैदान भी इसका महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं।

महत्व

स्वामी विवेकानंद कट्टर वेदान्ती थे। वे वेदों और उपनिषदों द्वारा निर्देशित ज्ञान पर पूर्ण विश्वास रखते थे। उन्होंने वेदांत दर्शन को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। उनका मानना था कि धर्म केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि मनुष्यत्व और सत्यनिष्ठा के माध्यम से ही उसका वास्तविक स्वरूप प्रकट होता है।
ईश्वर से मिलने के लिए केवल मंदिर या मस्जिद जाना आवश्यक नहीं है, बल्कि प्रत्येक वह स्थान जहाँ निःस्वार्थ कर्म के माध्यम से मानव सेवा की जाती है, वही ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग है।
सदियों तक पराधीन रहने के कारण भारतीय समाज में कई प्रकार की कमजोरियाँ और दोष प्रवेश कर गए थे। फिर भी भारतीय संस्कृति अपने पुण्य प्रभाव और ईश्वर की कृपा से पूर्णतः नष्ट नहीं हुई। यद्यपि उसके प्रसार और गहराई में समय के साथ कमी आई और अनेक प्रतिकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं, फिर भी वह अपनी रक्षा करने में समर्थ रही।
एक के बाद एक शक्तिशाली विदेशी प्रभावों के आघात से भारतीयों का जीवन भयभीत हो गया था। ऐसी स्थिति में आत्मरक्षा के लिए कई अस्वाभाविक और अवांछनीय उपाय अपनाने पड़े। साथ ही बाहरी देशों से भारत पर कई प्रकार के आरोप भी लगाए गए।
उदाहरण के लिए, भारत में अपने धर्म का कोई पृथक नाम नहीं था। किंतु विदेशी धर्मावलंबियों के भारत आगमन के बाद अपनी प्राचीन सनातन परंपरा को सुरक्षित रखने और उसे अधिक मान्यता देने के लिए उसे "हिंदू धर्म" कहा जाने लगा। परिणामस्वरूप भारतीय, जो पहले धर्म को केवल धर्म के रूप में जानते थे, अब सांप्रदायिक दृष्टिकोण से स्वयं को हिंदू और अन्य लोगों को भिन्न धर्मों का मानने लगे।
इस प्रकार जो धर्म पहले शांति और सद्भाव का मार्ग था, वही धीरे-धीरे विवाद और विभाजन का कारण बनने लगा।
स्वामी विवेकानंद के अनुसार ईश्वर तीन गुणों से सम्पन्न है—

1. ईश्वर की सर्वव्यापकता
2. सर्वगुण सम्पन्नता
3. सर्वशक्तिमत्ता

विवेकानंद के अनुसार इन तीनों गुणों के समन्वय से ही आत्मा परमात्मा के साथ एकीकृत हो सकती है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

उद्देश्य

शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण में स्वामी विवेकानंद ने किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। उनका मानना था कि शैक्षिक उद्देश्यों का आधार आध्यात्मिक दृष्टिकोण होना चाहिए, क्योंकि केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से उद्देश्यों एवं मूल्यों का निर्धारण समाज और व्यक्ति के लिए अधिक लाभकारी सिद्ध नहीं हो सकता।
मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. स्वामी विवेकानंद के नव वेदांत दर्शन का अध्ययन करना।
2. स्वामी विवेकानंद के धार्मिक विचारों का अध्ययन करना।
3. स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
4. स्वामी विवेकानंद के नव वेदांत दर्शन की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

सुझाव

- स्वामी विवेकानंद के नव वेदांत दर्शन की उपयोगिता का मूल्यांकन करना।
- स्वामी विवेकानंद के उद्देश्यों के संदर्भ में रामकृष्ण मिशन के कार्यों का मूल्यांकन करना।
- स्वामी विवेकानंद के शिक्षा-दर्शन का अन्य भारतीय तथा पाश्चात्य दार्शनिकों के शिक्षा-दर्शन से तुलनात्मक अध्ययन करना।
- स्वामी विवेकानंद की धर्म शिक्षा की सार्थकता का वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में अध्ययन करना।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद के नव-वेदांत दर्शन और धार्मिक विचार आज की शिक्षा प्रणाली में अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। उनके विचारों का मूल आधार मानवता, आत्म-विकास, चरित्र निर्माण और व्यावहारिक आध्यात्मिकता है, जो आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यों से पूर्णतः मेल खाता है। वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रहकर व्यक्तित्व के समग्र विकास पर केंद्रित हो गई है, जिसमें विवेकानंद के "मन, बुद्धि और आत्मा के संतुलित विकास" का सिद्धांत अत्यंत उपयोगी है।
उनका नव-वेदांत दर्शन सभी धर्मों की एकता और सार्वभौमिकता पर बल देता है, जो आज के बहुसांस्कृतिक और विविधतापूर्ण समाज में सहिष्णुता एवं समरसता को बढ़ावा देता है। इसके अतिरिक्त, उनका 'शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य निर्माण' का विचार विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, आत्मविश्वास और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने में सहायक है।
इस प्रकार, स्वामी विवेकानंद के धार्मिक एवं दार्शनिक विचार न केवल आध्यात्मिक उन्नति के लिए, बल्कि एक सशक्त, नैतिक और समावेशी समाज के निर्माण हेतु आधुनिक शिक्षा में मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.2 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, लक्ष्मी नारायण (1992) — महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री, कैलाश प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद।
2. गुप्ता, डॉ. एस. पी. (2002) — आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद (1986) — भारतीय शिक्षा का इतिहास, राम नारायण लाल बेनी माधव, इलाहाबाद।
4. पाण्डेय, डॉ. राम शकल (2007) — शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
5. पाण्डेय, डॉ. राम शकल (2004) — विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।